Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 529–535

A STUDY OF THE IMPACT OF ONLINE EDUCATION ON THE LEARNING AND PERSONALITY OF SECONDARY LEVEL STUDENTS

ऑनलाइन शिक्षा का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम व व्यक्तित्व पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन

Anita Swarnkar [1]

[1] Phd Scholar, Jaggannatha University, India

ABSTRACT

English: In the presented research study by researcher in "Study of the impact of online education on the Learning and personality of secondary level students", The reseatcjer has studied the impact of online eduction on the Learning and personality of the students. In this research a significant difference has been found in the learning of the students of government and private institution in this study correlation has been found in Learning and personality of the students studing in government and private schools.

Hindi: प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा ''ऑनलाइन शिक्षा का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम व व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' में ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के अधिगम व व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है इस शोध में ऑनलाइन शोध में ऑनलाइन शिक्षा का सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अधिगम में सार्थक अन्तर पाया गया है इस अध्ययन में सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम व व्यक्तित्व में सहसम्बंध पाया गया है।

Keywords: Online Education, Learning, Personality, Effect of Online Education on Learning, ऑनलाइन शिक्षा, अधिगम, व्यक्तित्व, ऑनलाइन शिक्षा का अधिगम पर प्रभाव

Corresponding Author

Anita Swarnkar,
anitaswarnkar9@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.1502

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

ऑनलाइन शिक्षा निरौपचारिक शिक्षा का एक रूप है ऑनलाइन शिक्षा भारत में काफी समय से विद्यमान है। एवं इसे बढावा देने के लिए भारत सरकार ने कई कदम उठायें है जैसे ज्ञान दर्शन, ज्ञान वाणी, एन्यूसेट उपग्रह आदि। ज्ञान दर्शन का शुभआरम्भ वर्ष 2000 में किया गया था। यह एक 24 घंटे का प्रसारण वाला चैनल है जो अपने सभी व्यूअर्स के लिए इग्नू के विभिन्न एकेडमिक सब्जेक्ट्स के प्रोग्राम्स प्रसारित करता है।

ज्ञान वाणी ने 2001 में मानव संसाधन विकास और सूचना और प्रसारण मंत्रालयों की एक सहयोगी मीडिया पहल के रूप में परिचालन शुरू किया । इग्नू चैनलों की चलाने वाला नोडल संगठन था

एडुसैट (जीसेट-3) पाठशाला स्तर से उच्च स्तर तक की सुदूर शिक्षा के लिए बना है। यह पहला समर्पित '' शिक्षा उपग्रह '' है जो देशभर में शैक्षणिक सामग्री के संवितरण के लिए कक्षा को उपग्रह आधारित दोतरफा संचार उपलब्ध कराता है यह भू - तुल्यकालिक उपग्रह आई - 2 के बस भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के द्वारा सितम्बर 2004 में स्थापित किया गया है।

इनके आलावा कई सरकारी एवं निजी संस्थान भी समय-समय पर युट्यूब चैनल, एवं टेलिग्राम आदि के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा के विकास में योगदान देते रहे है। किसी भी अनुसंधान में तथ्य सामग्री का अत्यधिक महत्त्व है। कोई भी अनुसंधान कार्य तथ्य सामग्री के अभाव में परिणाम या निष्कर्ष निकालने तथा उसकी विश्वसनीयता व वैधता बनाने में असमर्थ होता है।

मनुष्य एक सामाजिक एवं बुद्धिजीवी प्राणी है और बौद्धिक योग्यता एवं क्षमता के आधार पर अन्य प्राणियों में श्रेष्ठ है। वही एक प्राणी है जो ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते है।

1) ज्ञान को एकत्र करना
2) ज्ञान को एक दूसरे तक पहुचाना
3) ज्ञान में वृद्धि करना

ज्ञान के उपर्युक्त तथ्य शोध में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि वास्तविकता के समीप आने में उपलब्ध ज्ञान सक्रिय भूमिका निभाते है। किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पहले के सिद्धान्तों व पूर्व के शोध से भली भांति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन शोधकर्ता को नवीनतम ज्ञान के शिखर पर ले जाता है। जहाँ उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्षो एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त हो जाता है। तथा यह ज्ञान होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहा रिक्तियाँ है कहा निष्कर्ष विरोध है कहा अनुसन्धान की पुनः आवश्यकता है। जब वह दूसरे शोधकर्ता के अनुसंधान कार्यो की जाँच एवं मूल्यांकन करता है तो उसे बहुत सी अनुसंधान विधियों बहुत से तथ्यों सिद्धान्तों संकल्पनाओं एवं सन्दर्भ ग्रन्थों का ज्ञान होता है। जो उसके अपने अनुसंधान में उपयोगी सिद्ध होते है।

समस्या कथन (statement of problem)

प्रस्तुत अध्ययन मे शोधार्थी ने अपनी समस्या का शीर्षक निम्नानुसार रखा है।

'' ऑनलाइन शिक्षा का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम व व्यक्तित्व पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन । ''

तकनीकि शब्दों का परिभाषीकरण

अधिगम

कॉल्विन - '' अनुभव के द्वारा हमारे मौलिक व्यवहार में परिवर्तन की प्रक्रिया को सीखना कहते है।''

('Learning is the modification of our readymade beheviour due to experience')

व्यक्तित्व

आलपोर्ट - ''व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जिसके द्वारा वह अपने वातावरण के प्रति एक विशिष्ट ढंग से समायोजन करता है।''

ऑनलाइन शिक्षा से जहाँ एक ओर शिक्षा में निरन्तर विकास हो रहा है वही दूसरी ओर विधार्थियों के अधिगम एवं व्यक्तित्व पर भी प्रभाव पड रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य -

प्रस्तुत शोधकार्य की सफलता हेतु शोधार्थी द्वारा निम्न उददेश्य का निर्धारण किया गया है:-

1) ऑनलाइन शिक्षा का सरकारी एवं निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

2) ऑनलाइन शिक्षा का सरकारी एवं निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3) ऑनलाइन शिक्षा की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

अध्यन की परिकल्पना:-

शोधार्थी ने अपने शोध को पूर्ण करने के लिए निम्न परिकल्पनाओं का चयन किया:-

1) ऑनलाइन शिक्षा का निजी एवम् सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियों के अधिगम में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
2) ऑनलाइन शिक्षा का निजी एवम् सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
3) ऑनलाइन शिक्षा का मा. स्तर के विधार्थियों के अधिगम एवम् व्यक्तित्व में कोई सहसम्बंध नहीं पाया जाता।
4) ऑनलाइन शिक्षा का निजी एवम् सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियों के अधिगम पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता
5) ऑनलाइन शिक्षा का निजी एवम् सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियों के व्यक्तित्व पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता
6) ऑनलाइन शिक्षा निजी एवम् सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियों पर समान रूप से प्रभावशाली नहीं है।
7) ऑनलाइन शिक्षा निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियों पर समान रूप से प्रभावशाली नहीं है।
8) ऑनलाइन शिक्षा सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियों पर समान रूप से प्रभावशाली नहीं है

जनसंख्या:-

पी.वी.यंग.''वह समस्त समूह जिसमे प्रतिदर्श का चयन किया जाता है जनसंख्या कहलाता है।''

बहुधा जनसंख्या अपरिमित होती है जब ऐसी जनसंख्या अपरिमित होती है तब ऐसी जनसंख्या से सामाजिक या मनोवेज्ञानिक अनुसंधानकर्ता प्रतिदर्श चुनकर अनुसंधान समस्या का अध्ययन करते है।

प्रस्तुत शोध कार्य में जयपुर जिले के सभी सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत मा. स्तर के विधार्थी शोध कत्री द्वारा निर्धारित जनसंख्या है।

न्यादर्श:-

शोध विशिष्ट (न्यादर्श) से सामान्य (जनसंख्या) की ओर बढता है। न्यादर्श के निरीक्षण एक विशिष्ट परिस्थिति होती है। जिसके निरीक्षणों को जनसंख्या के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

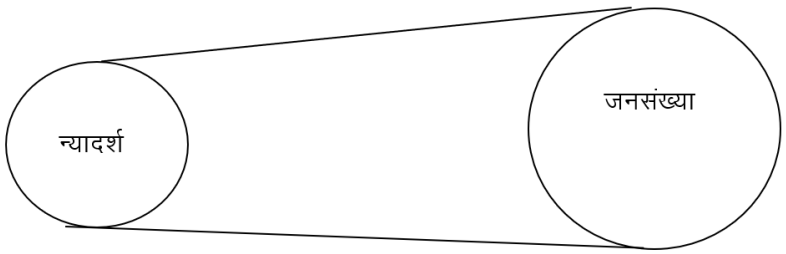

प्रस्तुत शोध कार्य मे शोधकृत्री द्वारा मा. स्तर के 400 विधार्थियों का चयन किया गया है।

''न्यादर्श प्रारूप का तात्पर्य करना तथा अनुमान लगाना सम्मिलित प्रक्रियाओ से है न्यादर्श ऐसा होना चाहिए जिससे जनसंख्या के बारे मे अनुमानो मे कम से कम त्रुटि हो।''

-(आर.ए.शर्मा)

न्यादर्श चयन हेतु शोधकृत्री द्वारा अर्थ सम्भाव्य (Semi – Probablity) विधि के अन्तर्गत क्रमानुसार प्रतिचयन (Systematilk Sampling Method) विधि का प्रयोग किया गया है

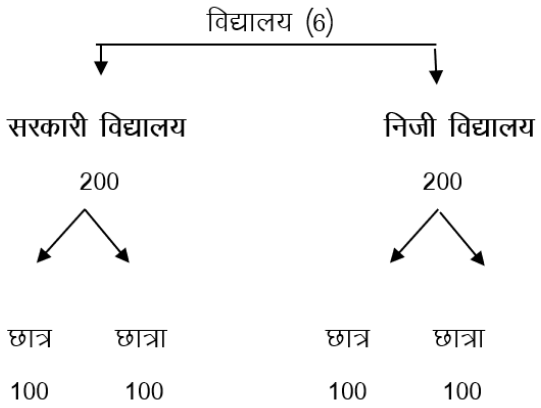

चर:-

जिस गुण विशेषता या अवस्था का अध्ययन करना हमारा उददेश्य है उसे चर कहते है ये दो प्रकार के है

1) **स्वतन्त्र चर-** स्वतन्त्र वह चर है जिसे प्रयोगकर्ता प्रत्यक्ष रूप से या फिर चयन द्वारा घटाता या बढाता है वह यह इस उददेश्य से करता है कि व्यवहार सम्बन्धी माप (आश्रित चर) पर इसके प्रभाव का अध्ययन कर सके।
2) **आश्रित चर -** आश्रित चर व्यवहार सम्बन्धी वह कारक है जिसका मनोवैज्ञानिक अनुसंधान मे मापन किया गया है तथा वह चर स्वतन्त्र चर के होने पर प्रदर्शित व हटाने पर अदृश्य हो जाता है

प्रस्तुत शोधकार्य मे चरो का विभाजन निम्नानुसार किया जाता है

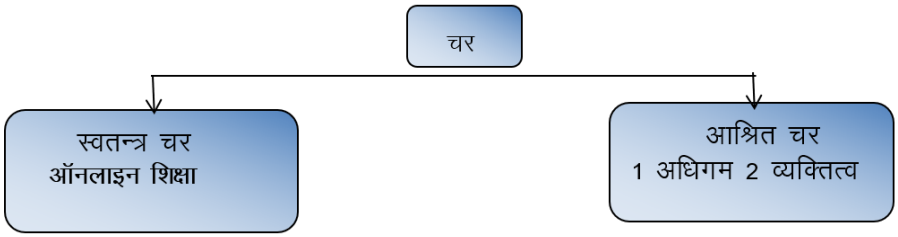

शोध में प्रयुक्त अध्ययन विधि -

प्रस्तावित शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा आँकडो का संकलन करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

उपकरण

प्रस्तावित शोध कार्य '' ऑनलाइन शिक्षा का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम व व्यक्तित्व पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन '' में शोधार्थी द्वारा अधिगम एवं व्यक्तित्व पर प्रभाव को जानने के लिए आकड़ो के संकलन के लिए स्वयं के द्वारा निर्मित लिंकर्ट की 3 स्केल मापनी पर आधारित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

- **अधिगम आधारित प्रश्न**
  1) मैं ऑनलाइन कक्षा में प्रतिदिन कुछ नया सीखता/ सीखती हूँ।

2) ऑनलाइन शिक्षा मुझे लिखने के अधिक अवसर प्रदान करती है, जिससे मैं विषय वस्तु को अच्छे से सीख पाता/ पाती हूँ।
3) ऑनलाइन शिक्षा से मुझे शैक्षिक तकनीकी का ज्ञान भी मिलता है।
4) ई-शिक्षा ने मुझे विशेषज्ञों के अनुभवों का अवसर प्रदान किया है।
5) ऑनलाइन कक्षा लेते समय में अपना ध्यान कैन्द्रित नहीं कर पाता ध्याती, इससे सीखने में कठिनाई होती है
6) ऑनलाइन कक्षा में मैं वास्तविक कक्षा अनुभवों की कमी महसूस करताध् करती हूँ।
7) ऑनलाइन शिक्षा में मैं अपने सहपाठियों से किसी विशय पर विचार-विमर्श नहीं कर पाताध् पाती हूँ।
8) ऑनलाइन कक्षा में मुझे अपनी शैक्षिक समस्याओं का तत्काल समाधान नहीं मिल पाता है।
9) ऑनलाइन शिक्षा से मेरा शब्द उच्चारण अच्छा हो गया है।
10) ऑनलाइन शिक्षा में एनिमेशन आधारित विडियों मुझे प्रायोगिक विषय को समझने में अधिक सहायता करते हैं।

- **व्यक्तित्व आधारित प्रश्नः-**
  1) ऑनलाइन शिक्षा लेते समय मैं मानसिक रूप से जल्दी थक जाता हूँ।
  2) ऑनलाइन शिक्षा ने मुझे एकांतप्रिय बना दिया है।
  3) ऑनलाइन शिक्षा मेरे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।
  4) ऑनलाइन शिक्षा से मेरी इच्छा शक्ति कम हो गयी है।
  5) ऑनलाइन शिक्षा के कारण मैं अब मोबाइल कम्प्युटर पर अधिक समय व्यतित करने लगा हूँ।
  6) ऑनलाइन शिक्षा ने मुझे अधिक संवेदनशील बनाया हैं।
  7) ऑनलाइन शिक्षा ने मुझे नयी-नयी विशय वस्तुओं की ओर अग्रसर किया हैं।
  8) ऑनलाइन कक्षा लेते समय कभी-कभी कक्षा के अन्तर्गत विडियों स्वतः ही आ जाते है, जिसको देखकर मेरा मन विचलित हो जाता है।
  9) ऑनलाइन शिक्षा ने मुझे नवीन ज्ञान के साथ नये दोस्त भी दिये हैं।
  10) ऑनलाइन शिक्षा लेने से मुझमें स्वयं से पढ़ने की आदत का विकास हुआ है।
- **प्रभावशीलता**
  1) जब में ई-शिक्षा के माध्यम से पढता हूँ तब मेरी सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है।
  2) ई-शिक्षा ने मेरी सृजनात्मकता को कम किया हैं।
  3) ई-शिक्षा ने मेरे व मेरे शिक्षक के सम्बन्धों को कमजोर किया है।
  4) ई-शिक्षा में तकनीकी ज्ञान की की कमी व संसाधनों की कमी के कारण मैं कई बार कक्षा से वंचित रह जाता हुँ।
  5) ई-शिक्षा महंगी शिक्षा प्रणाली का एक सरल विकल्प है।
  6) ऑनलाइन शिक्षा की सफलता परिस्थितियों पर निर्भर है।
  7) ऑनलाइन शिक्षा से मेरी दिनचर्या पर काफी बुरा प्रभाव पड़ा है।
  8) ऑनलाइन शिक्षा ने मुझे अधिक खर्चीला बना दिया है।
  9) ऑनलाइन शिक्षा ने मुझे नये आदर्श प्रदान किये हैं।
  10) ऑनलाइन शिक्षा ने मेरी तार्किक क्षमता को कम किय

1) स्नेह पब्लिक स्कुल मुहाना, सांगानेर
2) अरविन्द श्री विद्या मन्दिर, सांगानेर
3) महात्मा गाँधी माध्यमिक विद्यालय ढाणी कुमावतान, साँगानेर
4) महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, साइपुरा
5) रीया इन्टरनेशनल एकेडमी सी. से. स्कूल साँगानेर
6) महात्मा गाँधी, राजकीय विद्यालय मदराम पुरा (साँगानेर)

सांख्यिकी विधि:-

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी द्वारा आंकडों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी विधियां अपनाई गयी।

1) मध्यमान
2) प्रमाणित विचलन
3) ज् परीक्षण
4) सह सम्बंध

परिसीमाऐं:-

शोध को सीमाओं मैं बांधना अतिआवश्यक है अन्यथा समय व श्रम का व्यय अधिक होता है।

अतः शोधार्थी द्वारा अपने शोधकार्य हेतु निम्न परिसीमाओं का निर्धारण किया गया -

1) प्रस्तुत शोध कार्य में मा. स्तर के 400 विधार्थियों पर अध्ययन किया जाएगा।
2) प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।
3) प्रस्तुत शोध कार्य में ऑनलाइन शिक्षा की प्रभावशीलता का के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया जायेगा
4) प्रस्तुत शोध कार्य में जयपुर जिले में संचालित सरकारी एवं निजी विद्यालयों में मा. स्तर में अध्ययनरत विधार्थियों तक सीमित रहेगा।
5) प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श चयन हेतु संभाव्य विधि का प्रयोग किया जायेगा।

शोध प्रबन्ध की समस्या '' ऑनलाइन शिक्षा का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम व व्यक्तित्व पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन । ''अनेक सीमाओं एवं कठिनाइयों के कारण यध्यपि अध्ययन काफी संक्षिप्त है फिर भी जो तथ्य प्रकाश मे आये है वे किसी सीमा तक अध्यापको, अभिभावको तथा विधर्थियों का मार्गदर्शन कर सकते है।

2. निष्कर्ष और सुझाव

शोधार्थी द्वारा अपने अध्ययन ''ऑनलाइन शिक्षा का मा.स्तर के विद्यार्थीयों के अधिगम एवं व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसके निष्कर्श रूप में सामने आया है कि ऑनलाइन शिक्षा का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर धनात्मक प्रभाव पड़ा है एवं यदि शिक्षक एवं अभिभावक सावधानी पूर्वक विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा लेने में मदद करे तो ऑनलाइन शिक्षा आनेवाले समय में अत्यधिक कारगर सिद्ध होगी।

प्रस्तुत अध्ययन केवल 400 विद्यार्थियों पर किया गया है, यदि यह अध्ययन एक बड़े न्यादर्श पर किया जाये तो अधिक विश्वसनीय परिणाम प्राप्त हो सकते है।

प्रस्तुत अध्ययन में ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किया गया है भावी अध्ययन में अन्य स्तरों के विद्यार्थियों पर भी ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव विद्यार्थियों के अधिगम एवं व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है, भावी अध्ययन में ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों की रूचि, अभिवृति आदि अन्य पक्षों पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Bissa, G., & Sharma, N. (n.d.). Denik Bhashkar. Retrieved from Denik Bhashkar.

Kapil, H. (1984). Anusandhan Vidhiya. H.P Bhargav Book House.

Kumar, D. (2020). About Us:Jagran. Retrieved 2020, from Jagran Web Site.

Mhesh, B. (2000). Aadhunik Manovigyan Tha Aayan Nirdesan. New Delhi: Prskashan Sansthan New Delhi.

Parasnath, & C.P Roya. (2020).

Parasnath, & Roy, C. (2020). Anusandhan Prichaya. Aagra: Laxminarayan Prakashan Anupm Plaza.

Pathak, P. (2000). Siksha Manovigyan. Aagra: Vinod Pustak Mandir Aagra.

Sareen, S. A. (N.D.). Sekshik Anusandhan Ki Karya Pranali. New Delhi: Vikas Publishing House.

Sharma, K. (N.D.).

Sharma, K., Kumar, Y., Godara, R. K., & Saini, R. P. (N.D.). Adhigam Avm Sikshan. Jaipur: K.K Publication.

Soni, D. P. (2020). About Us:Jagran. Retrieved 2020, From Jagran.

Soni, P. (2020). Jagran. Retrieved 2020, From Jagran.

Visth, D. (2007/08). Siksha Manovigyan. Aagra.